L.N.M. College of Higher Education

B.ED. - (2019-21) - First Year / BCC-4 (Language Across the Curriculum)

Date - 12/05/2020 (Tuesday). (By - Rakesh Sir.)

UNIT-3 / Ch-4 → Developing Listening And Speaking Skills

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer type Question)

(सुनने एवं बोलने के कौशलों का विकास)

(1) प्रश्न - सुनने तथा बोलने के कौशल पर एक लेख लिखिए।
(Write an essay / notes on Developing listening skill and speaking skill.)

उत्तर → उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में भाषा के मूल कौशलों में अपेक्षित योग्यताओं का विभिन्न स्तरों पर विभिन्न अभिकरणों द्वारा निर्धारण करने का प्रयास किया गया है। राष्ट्रीय अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद् तथा राज्य शिक्षा संस्थाओं की विभिन्न गोष्ठियों में भी इन कौशलों के विकास पर विचार-विमर्श किया गया था।

सुनने की योग्यता - (Listening Skills) :- भाषा की शिक्षा के अन्तर्गत सुनने का अर्थ है - बोधपूर्वक श्रवण करना। केवल ध्वनि संकेतों का श्रवण ही, सुनने की योग्यताओं के अन्तर्गत मान्य नहीं है, वरन् ध्वनि संकेतों के साथ-साथ उनका अर्थग्रहण भी सुनने की योग्यता का अविभाज्य अंग माना जाता है।

उच्च अथवा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सुनने की योग्यता के समुचित विकास पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि -

(1) इस स्तर के उपरान्त विश्वविद्यालयीय शिक्षण-प्रक्रिया में भाषण पद्धति प्रधानतः प्रयोज्य होती है।

(2) मनुष्य को अपने दैनिक जीवन में सुनने, बोलने, पढ़ने तथा लिखने की क्रियाओं में से सर्वाधिक सुनने की क्रिया करनी पड़ती है, किन्तु महत्त्व की दृष्टि से बढ़कर बोलना है। आज के प्रजातान्त्रिक युग में भाषण के बल पर ही दूसरों को प्रभावित करके अपने पक्ष में किया जाता है। अतः बोलने की कला का जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। → P.T.O. →

Scanned with CamScanner

बोलने की योग्यताओं का विवरण → (Details of Speaking ablities)

मौखिक अभिव्यक्ति के रूप →

(1) वार्तालाप
(2) वाद-विवाद
(3) भाषण-प्रवचन
(4) संवाद
(5) कविता पाठ
(6) वर्णन विवरण
(7) चर्चा (परिचर्चा, पैनलचर्चा, दाम्पत्य)
(8) आशुभाषण

विषय — (1) विद्यार्थियों के दैनिक जीवन से सम्बद्ध राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक समस्या विषयक सरल विषयों पर।

2) राष्ट्रीय चेतना से सम्बन्धित सरल विषयों पर।

3) महापुरुषों के जीवन से संबन्धित विषय पर।

4) स्वानुभूत विषयों पर, यथा— यात्रा वर्णन का वर्णन, किसी घटना का वर्णन, किसी उत्सव मेले आदि का वर्णन, प्रकृति वर्णन, किसी खेल का वर्णन आदि।

(5) सरल वैज्ञानिक विषयों पर।

अपेक्षित योग्यताएँ (उच्चारण) →

(1) बालक शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण करते हुए बोल सके।
(2) अर्थानुकूल उचित आरोह-अवरोह सहित बोल सके।
(3) उच्चारण और लहजे में स्थानीय बोलियों के प्रभाव से मुक्त रह सके।
(4) विषय और अवसर के अनुकूल अपनी वाणी को नियंत्रित कर सके।
(5) वाक्य में यथोचित बलाघात करते हुए बोल सके। (6) बोलने में समुचित गति, यति तथा प्रवाह का निर्वाह कर सके।
(7) वाक्य को उचित अर्थ-इकाइयों में विभक्त करते हुए बोल सके।

भाषा एवं शैली — (1) बोलते हुए स्वाभाविक भाषा का प्रयोग कर सके।
(2) प्रसंगानुसार शब्दों, मुहावरों का संगत प्रयोग कर सके।
(3) वर्णन में चित्रात्मक भाषा का प्रयोग कर सके।
(4) विषय और अवसर के अनुकूल भाषा का प्रयोग कर सके।
(5) मौखिक अभिव्यक्ति की मौलिक शैली का विकास कर सके।
(6) छन्द और भाव के अनुकूल कविता पाठ कर सके।
(7) बोलते-बोलते श्रोताओं की प्रतिक्रिया को समझ सके।

वस्तु-प्रस्तुति — (1) अभीष्ट सामग्री को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत कर सके।
(2) विभिन्न स्थितियों के अनुरूप बोलने में यथोचित शिष्टाचार का पालन कर सके।
(3) अपने कथन को उदाहरण, दृष्टान्त, उद्धरण आदि द्वारा रोचक बना सके।
(4) [illegible] दे सके।